International Journal of Research in Social Science
Vol. 12 Issue 07, July 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बाल विकास पर माता–पिता क धार्मिकत्ता का प्रभाव

ज्योति सिसोदिया
शोध छात्रा (मनोविज्ञान)
वी०आर०ए० बिहार विश्वविद्यालयमुजफ्फरपुर

भूमिका :–बाल विकास की एक लंबी श्रृंखला होती है इस श्रृंखला में व्यक्तित्व के हर पहलू का क्रमशः निर्माण होता जाता है। शैशवावस्था की किस घटना ने चरित्र निर्माण में कौन सा प्रभाव डाला और उससे भावी जीवन की लम्बी यात्रा पथ में कहाँ–कौन सा मोड़ आया यह जानना अत्यंत कठिन है। इस व्यक्तित्व निर्माण के रास्ते में माता–पिता वह प्रथम तत्व होता हैं जिसे शिशु को जीवन का प्रथम अनुभव मिलना शुरू होता है। यह क्रम परिपक्वावस्था तक चलता रहता है। एक कुशल स्वर्णकार एक सुन्दर आभूषण निर्माण करता है लेकिन इस निर्मित मनोहारी आभूषण को देख क रवह स्वयं भी यह बता पाने में असमर्थ ही रहेगा कि उसकी उस छोटी सी हथौड़ी की किस चोट ने आभूषण को कौन सा रूप दिया था। एक कुशल माता–पिता अपने बच्चों के पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण तो कर सका है लेकिन इनकी भाषा भी उसी मौन स्वर्णकार की भाषा होती है जिसे वह व्यक्त नहीं कर सकता है।

बल विकास का जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल से लेकर आज तक यह महत्व का विषय रहा है। प्राचीन काल में सर्वांगीन विकास हेतु गुरू आश्रम का सहारा लिया जाता था। लेकिन इस आधुनिक युग में प्रत्येक माता–पिता अपने बच्चों के विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते हैं। बच्चों में जन्म के साथ ही शारीरिक, मानसिक, क्रियात्मक, ज्ञानात्मक, संवेगात्मक, शिक्षा एवं चरित्र का विकास भी प्रारंभ हो जाता है। जो आगे चलकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के रूप में प्रकट होता है। इन सारे विकासों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रू‍प से माता–पिता की मनोवृति का निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है।

विकास उनप्रगतिशील परिवर्तनों को कहते हैं जो नियमित एवं क्रमिक होता है। बाल्यावस्था जीवन की सबसे अनमोल अवस्था होती है। प्रारम्भिक कारण में बच्चों को किसी भी चीज की जानकारी स्पष्ट रूप से नहीं होती है। चुकि वे माता–पिता पर अपनी हर आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु निर्भर करते हैं।

परिवार एक सार्वभौमिक संस्था है जिसमें माता–पिता अपनी सभी सेवाओं, अनुभवों के द्वारा स्नेह के साथ बच्चों का विकास करने का प्रयास करते है। बच्चों के लिए जो भी करते हैं वह निःस्वार्थ भाव से करते हैं माता–पिता की विशेषताओं से प्रभावित होते हैं। माता–पिता एक सुदृढ़ वृक्ष के समान और बच्चे उसके फूल, फल माने जाते हैं। मेकाइवर तथा पेज ने लिखा है–परिवार वह समूह

है जो लिंग संबंधी आधार पर परिभाषित किया जाता है और काफी छोटा व इतना स्थायी है कि बच्चों की उत्पति और पालन–पोषण की व्यवस्था करने योग्य है।

जॉन आम्स कोमेनोयस (1560–1670) इन दी ग्रेट डेडीकेटेड ने स्पष्ट विकास की अवस्था को चार भागों में बांटा जिसकी अवधि छः वर्ष एक अवस्था में रखा, नवजात शिशुकाल, शैशवावस्था, बाल्यावस्था, युवावस्था आदि। विलियन जेम्स, मैकमूलर, डेभर, बर्ट आदि मनोवैज्ञानिकों ने वंश परम्परा के क्रम में उसमें पाये जाने वाले व्यवहार की व्यवस्था किया है। जी. स्टेनले हॉल बाल विकास आन्दोलन का प्रारम्भ अमेरिका में किया जिस आधार पर आज इस आन्दोलन के जनक के रूप में जाने जाते हैं। इस संबंध में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया गया अध्ययन महत्तवपूर्ण है। पियागैठ वेर्ट 1918, हेगलीट 1930, मैकार्थी, हॉल ने बच्चों के विकास पर पड़ने वाले विभिन्न कारकों के प्रभावों का स्पष्ट रूप में उल्लेख किया है। वाटसन 1919 में कहा था कि बच्चा जब पैदा होता है तो वह अपने माथे पर लिख कर नहीं आता ि कवह बेइमान है या ईमानदार, धर्मात्मा है या पापी। वह यह सब कुछ इस दुनियाँ में कदम रखने के बाद अपने परिवार से अपने पड़ोस से, अपने आस–पास के पूरे माहौल से क्रमशः सीखता है और अपने पाप को विकसित करता है। जैसा भी आकार दो वह वही आकार धारण कर लेगा।

हम इसे अच्छा आदर्श नागरिक भी बना सकते हैं और बुरे से बुरे कर्म करने वाला अपराधी भी। वाटसन के इस चिंतन के बाद से मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों, गृहवैज्ञानिकों एवं जिज्ञासु माता–पिता का ध्यान बाल पोषण प्रणाली की ओर गया और इसे अधिक से अधिक नियंत्रित और वैज्ञानिक बनाने की दिशा में प्रयास होने लगा। अब सभी मानने लगे हैं कि एक युवा अपने शैशव स्मृतियों को कभी भूलता नहीं है और ये स्मृतियाँ ही उसके भावी जीवन का पथ निर्धारण करती है इस संदर्भ में अभिभावकत्व प्रणाली को जीवन निर्माण का प्रथम एवं अंतिम सोपान कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी।

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत बाल विकास पर माता–पिता के उत्तरदायित्व का किस रूप में प्रभाव पड़ता है इसे देखना है। ग्राफ 1964 ने उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्ति उसे कहा है जिसके अंदर अपनी एवं सामाजिक जिम्मेदारी की भावना भी हुई हो, उसमें अनुचित उचित की परख इतनी अधिक हो कि किसी भी काम को करने के पहले उसमें परिणाम के बारे में उसे पूरा अनुमान हो जाता है। ऐसा व्यक्ति नैतिकता और अनैतिकता के बीच भेद करने की क्षमता रखता है तथा कोई भी अनैतिक कार्य जिससे अपनी या किसी अन्य व्यक्ति की हानि होती हो वह नहीं करता है। इसके विपरीत ऐसे व्यक्ति जिसमें उत्तरदायित्व की भावना कम होती है अपने भावनाओं में संवेदनशील होते हैं तथा उनके व्यवहार अनियंत्रित होते हैं वे अपनी निजी स्वार्थ से प्रभावित होकर ही कोई कार्य करते हैं। इनके विचार पूर्वधारणाओं से ग्रसित होते हैं इसलिए इनके विचार स्थिर नहीं रह पाते हैं। इस विश्लेषण से ऐसा लगता है कि एक उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्ति सामाजिक, राष्ट्रीय एवं पारिवारिक समस्याओं के प्रति भी ठोस और जवाबदेही पूर्ण विचार रखता है। साथ ही अपने बच्चों के विकास समुचितरूप में तो रहा है या नहीं इसका ज्यादा ख्याल रखता है।

प्राक्कल्पना :– इस पृष्ठ भूमि में–यह प्राक्कल्पना स्थापित किया जाता है कि उक्त धार्मिक प्रवृति के बालक अभिभावक के बीच निम्न धार्मिक प्रवृति के बालक–अभिभावक की अपेक्षाअधिक अनुकूल सम्बन्ध पायी जायेगी।

क्षेत्र :– मुजफ्फरपुर शहर अन्तर्गत विभिन्न इन्टर स्तरीय माहाविद्यालय में अध्ययनत छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया जायेगा।

प्रतिदर्श :– मुजफ्फरपुर शहर अन्तर्गत इन्टर स्तरीय महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं में से (300) तीन सौ छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया जायेगा।

संयंत्र एवं मापनी :– धामिर्कता मापनी :– व्यक्त्वि के धामिर्कता आयाम को मापने के लिए भूष्ण के अनुसार धर्मिकता एक उच्च कोटि की मनोदशा है जो व्यक्ति को चाहे वह किसी भी धर्म या सम्प्रदाय का क्यों न हो वह ऐय की भावना से देखने को प्रेरित करता है। धार्मिकता का अर्थ संकुचित रूप में न लिया जाय, जैसा कि सामान्य बोल–चाल की भाषा में उन सभी लोगों को धार्मिक कह दिया जाता है, जो नित्य पूजा–पाठ करते हैं, या नमाज पढ़ते हैं या चर्च या गुरू द्वारा में जाते हैं। सच्चे अर्थों में एक धार्मिक व्यक्ति अपने दृष्टि से हमेशा अपना सामीष्य माँगता है तथा प्रत्येक जीव में ईश्वर का बास मानता है। धार्मिक व्यक्ति साहित्य, उदार, क्षमा शील होता है तथा दूसरों के लिए सर्वस्व की भावना से ओतप्रोत होता है। वह शान्तिप्रिय होता है। दूसरी ओर सू अधारर्मिक व्यक्ति अनीशहरवादी अनुदार तथा क्रूर हुआ करता है। वह प्रतिकार की भावना से परिपूर्ण होता है।

भूषण 1970 के द्वारा हिन्दी में निर्मित धार्मिकता मापनी एक पाँच बिन्दु मापनी है। इसमें प्रत्येक वक्तव्य के सामने पाँच बिन्दु अंकित है। इसमें कुछ वक्तव्य साकारत्मक एवं कुछ नाकारात्मक है। इस मापनी के आधार पर प्राप्त प्राप्तांओं में उच्चतम 180 (एक सौ अस्सी) एवं निभाक्तम 36 (छतीस) की संभावना है। इस मापनी के द्वारा उक्तम अंक प्राप्त उच्च धार्मिक एवं नियुतम अंक प्राप्त निम्न धार्मिक की श्रेणी में आता है।

परिणाम :– प्रस्तुत अध्ययन कार्य में वर्णित उद्देश्य की प्राप्ति हेतु मुजफ्फरपुर शहर अन्तर्गत इन्टर स्तरीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के तीन सौ प्रतिदर्श पर अध्ययन किया गया। व्यक्त्वि के धार्मिकता चर श्री जनसंख्या में संभावित वितरण प्रणाली को जानने के लिए भूषण (1970) के द्वारा हिन्दी में निर्मित एवं सत्यापित धार्मिक मापनी जो एक पाँच बिन्दु की लिकर्ट प्रणाली पर आधारित मनोवृति मापनी है, का प्रयोग किया गया इस मापनी के आधार पर अधिकतम प्राप्तांक एक सौ अस्सी एवं न्यूनतम प्रातांक (36) छत्तीस की संभावना है। दोनों ही समूहों से प्राप्त प्राप्ताकों के आधार पर सांख्यिकिय विश्लेषण के आधार पर प्राप्त प्रातांओं का मध्यमान 123.50 मध्यांक 124.53 एवं बहुलॉक 125.04 प्राप्त हुआ है। प्रतिदर्श के प्राप्तांको के प्रसार एवं वितरण को सारिणी संख्या एक में उललेख किया गया है। प्रतिदर्श से प्राप्त केन्द्रीय प्रवृति के मापों का भी उल्लेख सारणी संख्या एक में किया गया है।

सरिणी संख्या–एक

मध्यमान	मध्यांक	बहुलांक	प्रमाणिक विचलन	मध्ययान की प्रभामिक त्रृटि
123.00	124.53	125.04	8.80	.51

सारिणी में वर्णित धार्मिकता मापनी के आधार पर वर्त्तमान प्रतिदर्श से प्राप्त प्राप्तांकों के प्ररिणामों के तुल्नात्मक विवेचन से निम्नलिखित बाते स्पष्ट होती हैः–

प्रतिदर्श से प्राप्त केन्द्रीय प्रकृति के तीनों ही मापो मध्ययान मध्यांक में बहुलक में इतनी निकस्ता तथा समानता है कि इस प्रतिदर्श को जनसंख्या के प्रतिनिधि के रूप में निविर्वाद स्वीकार किया जा सकता है।

इस प्रतिदर्श के मध्ययान की प्रथामिक त्रृटि .51 पाया गया है जिसके आधार पर 99% प्रतिशत विश्वास की सीमा में यह कहा जा सकता है कि प्रतिदर्श का मध्यमान जनसंख्या के मध्यमान से अधिक से अधिक (.51 X 2.58 = 1.31) की सीमा में विचलन करता है। अर्थात इसकी विश्वसनीयता सीमा .01 है। धार्मिकता चर के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।

(क) वर्त्तमान प्रतिदर्श में धार्मिकता प्राप्तांकों का वितरण वास्तविक जनसंख्या के प्रसामान्य वितरण सिद्धान्त के अनुमूल है।

(ख) प्रतिदर्शका धार्मिकता मध्ययान जनसंख्या के वास्तविक मध्ययन से निकटता रखने के कारण प्रतिदर्श जनसंख्या का वास्तविक प्रति निधिमाना जा सकता है।

(ग) निष्कर्षों से यह प्रमाणित होता है कि व्यक्त्वि का धार्मिकता चर जनसंख्या में समान रूप से वितरित नहीं है अर्थात यह प्रसामान्य वितरण सिद्धान्त पर आधारित होने के कारण इसके एक छोड़ पर जहाँ उच्च धार्मिक प्रवृति के लोग पाये जाते हैं वही उसके दूसरे छोड़ पर विपरीत दिशा में धार्मिकता में विश्वास करने वाले लोगों की संख्या भी उतनी ही है, लेकिन एक बड़ी संख्या इन दोनों के बीच पायी जाती है।

इस प्रकार देखा गया है कि अभिभावक वालक सम्बन्ध पर व्यक्तिव के धार्मिकता चर का भी प्रभाव पड़ता है।

धार्मिकता में अविश्वास करने वाले व्यक्ति भी उसी अनुपात में विधमान है लेकिन एक बड़ी जनसंख्या इन दोनों ही बिन्दुओं के बीच पड़ती है।

Refrence :-

1. Altach, P.G. (Ed) 1968. Turmoil and Transition. Higher Education and student's Polities in India. New York. Basic Book company June.
2. Astin, H.S. (1971) Self perception of student Activists, Journal of college student personnel. July. Vol. 12 (4) 263-270.
3. Bhogle, A.D. (1965) Case study of student strike, Journal of University Education.
4. Bhushan L.I. (1970) Religiosity scale Ind. J. Psychol, 45 (4) 335-342.
5. Edwards, A.L. (1968) Experimental Design in psychological Research (3rd) (end), New York: Hopt, Rinchart end Winston Inc. (Indian edition).

6. Darbara Singh 1946– The Indian stnuggle Lahore, Hore publications.
7. Freud (1894) – The Basic writings of sigmunal freud, the Modern library, New Yourk.
8. Gandhi Kirshore 1972. – Student unrest and university response, Sunday, Fed. 13.
9. Garrette H.E. (1955) – Statistacsion in psychology and Education (Fourth edition) Longman, Crreen and Co. New York.
10. Kabir, H (1958) – Student Jnrest tcauses and cure, P. 10, Calcutta orient Book company.
11. Kale, S.S. (1972) – Student unrest reasores, results, Remedics, Student serics Review. Vol. 10, No. 2, P-17-22.